अनूठा है बेरोज़गारों का 'गुज़र बसर कॉलेज'

सलमान रावी, बीबीसी संवाददाता

गुरुवार, 5 जनवरी, 2012 को 18:03 IST तक के समाचार

ये है छत्तीसगढ़ का गुज़र बसर कॉलेज यानी आजीविका कॉलेज

यह ना तो कोई विश्वविद्यालय है और ना ही मैनेजमेंट संस्थान मगर इसकी इमारत कई अच्छे विश्
बीच जारी हिंसा के ख़ौफ़ के साए में जीने को मजबूर युवा इस इमारत में अपने भविष्य को संवारने क

बढ़ती बेरोज़गारी और पलायन को रोकने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा ज़िला
बेरोज़गारों के लिए एक कॉलेज शुरू किया गया है.

इस कॉलेज का नाम है गुज़र बसर कॉलेज यानी 'लाइवलीहुड कॉलेज'. प्रशासन का दावा है कि यह भा

इस महाविद्यालय में दाख़िला लेने के लिए किसी योग्यता की ज़रुरत नहीं है और यहाँ बेरोज़गार युव

शिक्षा

यहाँ दाख़िला लिए कई युवक युवतियाँ ऐसे हैं जिन्होंने या तो पढ़ाई छोड़ दी है या फिर दूसरी कक्षा त
लेकिन उनकी कोई शैक्षिक योग्यता नहीं है.

बस्तर के सुदूर इलाक़ों में रोज़गार के संसाधनों का काफ़ी अभाव है और यह कहा जा रहा है कि इसी अ
पलायन हो रहा है. खास तौर पर दंतेवाड़ा और बीजापुर के सुदूर जंगली इलाकों में कई ऐसे गाँव हैं जो
रोटी की तलाश में दूसरे इलाक़ों में चले गए हैं.

इस गुज़र बसर कॉलेज में बीजापुर के आवापल्ली से आई रश्मि कुमारी ने बातचीत के दौरान बताया
"शाम पांच बजे के बाद गाड़ियाँ नहीं चलती हैं. सूरज ढलते ही ज़िन्दगी थम जाती है." रश्मि एक बेहत

कुआकोंडा के बीर नाथ कहते हैं कि वो एक ग़रीब आदिवासी किसान परिवार से आते हैं और उनके पि
रोज़गार है. ऐसे में हम क्या करें. अब यहाँ कुछ काम सीख कर आजीविका चलाने की कोशिश करूंगा

रोज़गार

अब दंतेवाड़ा का ज़िला प्रशासन चाहता है कि यहाँ से पलायन रुके और स्थानीय युवाओं को रोज़गार

गुज़र बसर कॉलेज यानी आजीविका कॉलेज के परिकल्पना के बारे में चर्चा करते हुए दंतेवाड़ा के कले एक बड़ी समस्या है. यहाँ के लोग अच्छा रोज़गार प्राप्त नहीं कर पाते हैं. इसी को दिमाग़ में रखते हुए जाए जिससे वह आजीविका चला सकें."

इस योजना को अमली जामा पहनाने के लिए पुराने महिला महाविद्यालय के भवन की मरम्मत कर किया गया है.

इस योजना के लिए दंतेवाड़ा जिला प्रशासन ने 'इंडिया कैन' नाम की संस्था से क़रार किया है जिसके शिक्षा भी दे रहे हैं.

इंडिया कैन के रोहित कहते हैं कि अब भारत सरकार से उन्हें एक प्रोजेक्ट की स्वीकृति मिली थी तो उ की तरफ़ से यह प्रस्ताव आया और इस पर काम शुरू हो गया. कम पढ़े लिखे बच्चों के लिए हाथ का को मैनेजमेंट और कंप्यूटर का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है.

'उम्मीद की किरण'

बेरोजगार कॉलेज से प्रशिक्षित कई युवकों और युवतियों को रोज़गार मिला है

दंतेवाड़ा के कलेक्टर ने बीबीसी को बताया कि इन बेरोज़गार युवकों को क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनु

प्रशासन के एक अधिकारी नागेश ने बताया कि पहले सोलर पैनेल को ठीक करने बाहर से कारीगर अ यहाँ के प्रशिक्षित युवक राज्य के दूसरे स्थानों पर जाकर इनकी मरम्मत का काम कर रहे हैं.

हाल ही में एल एंड टी और एस्सार जैसी कंपनियों ने इस बेरोज़गार कॉलेज से प्रशिक्षित युवकों और यु

दक्षिण बस्तर के तनावपूर्ण माहौल और अभाव में जी रहे नौजवानों के लिए 'बेरोज़गार कॉलेज' एक उ ख़बर फैल रही है, वैसे-वैसे सुदूर इलाक़ों के नौजवान बेहतर ज़िन्दगी का सपना संजोए दंतेवाड़ा पहुँच

गुजर बसर कॉलेज से संवरती...

मुख्यालय में एक ऐसा अनुठा कॉलेज शुरू हुआ है जिसमें जिले के अशिक्षित-शिक्षित दोनों ही तरह के युवाओं को उनकी रूचि के अनुसार तकनीकी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस कॉलेज में कोई सौर ऊर्जा से चलने वाले उपकरणों की मरम्मत करना सीख रहा है। तो कोई हैण्डपंप सुधारना या प्लंबिंग का काम। दंतेवाड़ा के इस आजीविका महाविद्यालय की स्थापना जिले के बेरोजगार युवाओं का कौशल उन्नयन कर उन्हें उनकी रूचि के अनुसार तकनीकी प्रशिक्षण देकर रोजगार के लिए तैयार करना है। नक्सल हिंसा प्रभावित इस क्षेत्र में अपनी पढ़ाई अधूरी छोड चुके युवाओं को भी तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्हें हुनरमंद बनाना और रोजगार के अवसर प्रदान करना इस कॉलेज की स्थापना के उद्देश्यों में शामिल है। अपनी तरह के पहले इस कॉलेज में युवाओं को सोलर पावर प्लांट स्थापना, मरम्मत एवं रख-रखाव, हैण्डपंप रिपेयरिंग एवं प्लंबर ट*निंग, ईलेक्ट*िशियन, हॉस्पिटेलिटी, ऑफिस मेनेजमेंट, कम्प्यूटर बेस्ड एकांउटिंग, सेल्स एण्ड मार्केटिंग, रिटेल मैनेजमेंट, एसी रिपेयरिंग, घरों में फाल्स सीलिंग करना, सिक्योरिटी गार्ड, आटोमोबाईल्स, बढ़ाईगिरी, कम्प्यूटर डिप्लोमा सहित सिलाई एवं ड*स डिजाईनिंग और स्पोकन इंगलिश के लिए भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस महाविद्यालय से अब तक तीन सौ युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। महाविद्यालय में प्रशिक्षण देने के काम में छत्तीसगढ़ राज्य अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण, लोकस्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, जिला पंचायत दंतेवाड़ा जैसी सरकारी संस्थाओं के साथ-साथ इंडियाकेन, आई.एल.एण्ड एफ.एस., लार्सन एण्ड टूब्रो, टूमारोफाउण्डेशन जैसी संस्थाएं भी लगी हैं। इस महाविद्यालय में जिला प्रशासन द्वारा एक साथ ढाई सौ युवाओं के प्रशिक्षण की सभी व्यवस्थाएं की गई हैं। महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थियों के लिए आवासीय सुविधा सहित भोजन व्यवस्था भी निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही है। महाविद्यालय में कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर सहित आधुनिक दृश्य-श्रव्य माध्यमों के द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। नैतिक और मानसिक विकास के लिए योगा तथा प्रोत्साहन व्याख्यायनों का भी आयोजन महाविद्यालय में किया जा रहा है। प्रायोगिक कार्यो के लिए विद्यार्थियों को समय-समय पर क्षेत्र भ्रमण भी कराया जा रहा है। इस महाविद्यालय में प्रशिक्षित युवाओं को कैम्पस चयन के द्वारा विभिन्न कंपनियों में नौकरी दिलाने का प्रयास भी जिला प्रशासन द्वारा किया जा रहा है। सोलर पावर प्लांट स्थापना मरम्मत एवं रख-रखाव से संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त 11 युवा छत्तीसगढ़ राज्य अक्षय ऊर्जा विकास निगम में, 08 युवा नोवास ग्रीन रायपुर में, 04 युवा छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी में, 05 युवा कोसमो कंपनी रायपुर में कार्यरत हैं। जिनका चयन महाविद्यालय में आयोजित कैम्पस प्रकिया द्वारा हुआ है। महाविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त एक युवा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बस्तर में, एक युवा लोकनिर्माण विभाग दंतेवाड़ा में, दो युवा किरंदुल नगरपालिका परिषद में तथा दो युवा आजीविका महाविद्यालय में ही सेवारत हैं। इन सभी युवाओं को मासिक पांच हजार रूपए से लेकर सात हजार रूपए तक की आमदनी आसानी से प्राप्त हो रही है। दंतेवाड़ा जिले के इस महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त युवा अपने क्षेत्रों में प्रकाश व्यवस्था के लिए लगे सौर ऊर्जा उपकरणों की मरम्मत के काम में भी लगे हैं। वहीं पंचायतस्तर पर चल रहे निर्माण कार्यों में राजमिस्त्री, बढ़ईगिरी, बारबेंण्डिंग आदि के काम के लिए भी स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित व्यक्ति उपलब्ध हो गए हैं। जिससे निर्माण कार्यों में तकनीकी त्रुटि की संभावना कम हो गई है।

साथ ही विकास कार्यों में भी तेजी आई है। इस कॉलेज से प्रशिक्षित अनुसूचित जनजाति वर्ग का युवा जगदीश मंडावी सुकमा क्षेत्र में लगे सौर ऊर्जा उपकरणों की मरम्मत कर पांच हजार रूपए प्रतिमाह कमा रहा है। जगदीश बताता है कि सौर ऊर्जा उपकरणों की मरम्मत से उसे एक स्थायी आमदनी प्राप्त होने से जहां परिवार के पालन-पोषण की चिंता खत्म हो गई है वहीं वह अपने क्षेत्र में रोशनी फैलाने के काम को संपन्न करके आत्मीय संतुष्टी भी महसूस कर रहा है। कुआकोण्डा विकासखण्ड के युवा त्रिलोकचंद और चिरूवाड़ा के सुरेश कुमार ने भी आजीविका महाविद्यालय में सोलर पावर प्लांट स्थापना और मरम्मत का काम सीखा है। वे बताते हैं कि उन्हें महाविद्यालय में ही नोवास ग्रीन रायपुर कंपनी ने छह हजार रूपए मासिक वेतन पर नौकरी दी है। बोरगुडा के नुपो जोगा, कोर्रा के सत्यनारायण सोढ़ी, गादीरास के चितुराम जैसे कई प्रशिक्षणार्थी हैं जो सोलर पावर प्लांट से जुडी कॉस्मो कंपनी रायपुर में काम कर रहे हैं। जिला प्रशासन द्वारा पूरे जिले के स्कूली विद्यार्थियों को निःशुल्क प्रदान किए जाने वाले गणवेश की सिलाई भी स्थानीय स्तर पर भी कराने की योजना है।

जिसके तहत जिले के स्व-सहायता समूहों की महिला सदस्यों और ग्रामीण महिलाओं को इस आजीविका महाविद्यालय में सिलाई और ड*स डिजाईनिंग का प्रशिक्षण दिलाने के लिए प्रक्रिया की जा रही है। महाविद्यालय द्वारा शासकीय संस्थाओं में कार्यरत कर्मचारियों के क्षमता विकास के लिए समय प्रबंधन और तनाव प्रबंधन पर भी प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं। इस तारतम्य में छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत होर्डिंग कंपनी के दंतेवाड़ा में कार्यरत 33 प्रशिक्षणार्थियों को सुरक्षा, दुर्घटना से बचाव, श्रमकानून, व्यक्तित्व विकास और समय प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण दिया जा चुका है। कलेक्टर श्री ओम प्रकाश चौधरी के नेतृत्व में दंतेवाड़ा जिले में पहले स्कूली छात्र-छात्राओं के लिए छू लो आसमान, नन्हें परिंदे और तमन्ना जैसे कार्यक्रमों ने जहां शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांति सी ला दी है वहीं अब बेरोजगार युवाओं को रोजगार लायक बनाने के इस महाविद्यालय ने क्षेत्र के युवाओं में एक नई जान भर दी है। नक्सल हिंसा से पीड़ित और वर्षो से विकास से दूर रहने वाले इस क्षेत्र में अब स्थानीय स्तर पर विकास के नए-नए आयाम गढ़ने वाले कुशल और सशक्त हाथ तैयार होने लगे हैं। अब दंतेवाड़ा के मायने नक्सल हिंसा से बदलकर शिक्षा और रोजगार के बढ़ते अवसर होने लगा है। विकास की ओर निहारते दंतेवाड़ा में अब जिला प्रशासन की दूरगामी योजनाओं से विकसित दंतेवाड़ा का सपना साकार होने को है।

बस्तर इम्पेक्ट

दंतेवाड़ा, रविवार दिनांक 01 जनवरी 2012

योजना...

विद्यार्थियों के हाथो मे पुस्तक, कॉपी, पेन के साथ-साथ पेचकस, पेंचिस सहित बड़े से टूलकिट्स भी.

गुजर बसर कॉलेज से संवरती जिंदगानी...

जिले में पिछले कुछ दिनों से एक कॉलेज लोगों का आकर्षण बना हुआ है। जिले के बेरोजगार युवाओं को हुनरमंद बनाने के लिए शुरू हुए इस कॉलेज को यदि हिंदी भाषा में आजीविका महाविद्यालय, अंग्रेजी भाषा में लाईवली हुड कॉलेज कहा जाए तो उर्दू भाषा में शायद इसका नाम गुजर बसर कॉलेज ही होगा।

जितेन्द्र नागेश. दंतेवाड़ा

कॉलेज का नाम आते ही जहन में बड़ी सी ईमारत, बड़े-बड़े कमरे, हाथों में पुस्तक कॉपी पेन पकड़े हुए विद्यार्थी और सूट-बूट से सुसज्जित प्राध्यापकों- प्रोफेसरों की छवि आती है। दंतेवाड़ा में शुरू हुए इस अनोखे महाविद्यालय में बड़ी ईमारत, बड़े-बड़े कमरे तो हैं ही यहां के विद्यार्थियों के हाथों में पुस्तक, कॉपी, पेन के साथ-साथ पेचकस, पिंचिस सहित बड़े से टूलकिट्स भी हैं। सामान्य कॉलेज में बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को ही प्रवेश मिल पाता है, जबकि दंतेवाड़ा जिले के इस कॉलेज में

प्रवेश के लिए शिक्षा का यह मापदण्ड भी नहीं है। इसीलिए इसमें शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के विद्यार्थी हैं और इन सब के बाद भी यदि इस कॉलेज को सही मायने में बेरोजगारों का कॉलेज कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। दंतेवाड़ा जिले में नक्सल हिंसा से शिक्षा के स्तर और शिक्षा की गुणवत्ता में आई कमी ने एक ओर जहां स्थानीय स्तर पर शिक्षित लोगों की संख्या सीमित सी कर दी है वहीं रोजगार के अवसर भी बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। इन कारणों से लोगों के जीवनस्तर में भी कोई विशेष बदलाव नहीं आ पाया है और उन्हें पास थोड़ी सी खेती के अलावा आय के और कोई साधन भी उपलब्ध नहीं हो पाए हैं। राज्य सरकार ने गरीब जनता को दो वक्त का भरपेट भोजन मुहैया कराने के लिए मुख्यमंत्री खाद्यान्न सुरक्षा योजना संचालित की है जिससे नक्सल प्रभावित इस क्षेत्र में गरीबों को जीने के लिए बहुत सहारा मिल गया है। दंतेवाड़ा जिले में इस बेरोजगारी के कारण हताशा के माहौल से ग्रस्त होकर युवाओं का बड़ी संख्या में विध्वंसक गतिविधियों से भी जुडने का भय बना रहता है। दंतेवाड़ा जिले के कलेक्टर श्री ओम प्रकाश चौधरी ने यहां की स्थितियों एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखकर दूरगामी सोच के तहत एक नए प्रकार के प्रयास के तहत बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त करने लायक बनाने का हौसला दिखाया है। श्री चौधरी के प्रयास से दंतेवाड़ा जिला...

शेष पेज 05 पर

आकर्षण का केन्द्र बना कॉलेज

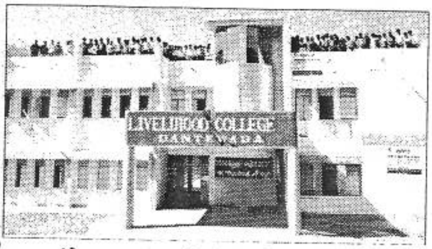

दंतेवाड़ा, 31 दिसंबर (देशबन्धु)। दक्षिण बस्तर दंतेवाडा जिले में पिछले कुछ दिनों से एक कॉलेज लोगों का आकर्षण बना हुआ है। जिले के बेरोजगार युवाओं को हुनरमंद बनाने के लिए शुरू हुए इस कॉलेज को यदि हिंदी भाषा में आजीविका महाविद्यालय, अंग्रेजी भाषा में लाईवली हुड कॉलेज कहा जाए तो उर्दू भाषा में शायद इसका नाम गुजर बसर कॉलेज ही होगा।

कॉलेज का नाम आते ही जहन में बड़ी सी ईमारत, बड़े-बड़े कमरे, हाथों में पुस्तक कॉपी पेन पकड़े हुए विद्यार्थी और सूट-बूट से सुसज्जित प्राध्यापकों- प्रोफेसरों की छवि आती है। दंतेवाडा में शुरू हुए इस अनोखे महाविद्यालय में बड़ी ईमारत, बड़े-बड़े कमरे तो हैं ही यहां के विद्यार्थियों के हाथों में पुस्तक, कॉपी, पेन के साथ-साथ पेचकस, पिंचिस सहित बड़े से टूलकिट्स भी हैं।

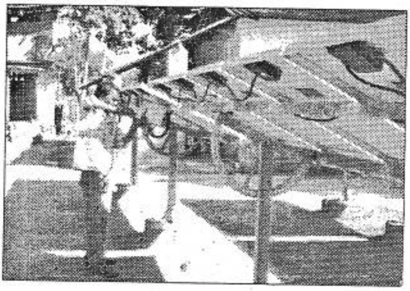

सामान्य कॉलेज में बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को ही प्रवेश मिल पाता है, जबकि दंतेवाडा जिले के इस कॉलेज में प्रवेश के लिए शिक्षा का यह मापदण्ड भी नहीं है। इसीलिए इसमें शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के विद्यार्थी हैं और इन सब के बाद भी यदि इस कॉलेज को सही मायने में बेरोजगारों का कॉलेज कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। दंतेवाडा जिले में नक्सल हिंसा से शिक्षा के स्तर और शिक्षा की गुणवत्ता में आई कमी ने एक ओर जहां स्थानीय स्तर पर शिक्षित लोगों की संख्या सीमित सी कर दी है वहीं रोजगार के अवसर भी बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। इन कारणों से लोगों के जीवनस्तर में भी कोई विशेष बदलाव नहीं आ पाया है और उन्हें पास थोडी सी खेती के अलावा आय के और कोई साधन भी उपलब्ध नहीं हो पाए हैं। राज्य सरकार ने गरीब जनता को दो वक्त का भरपेट भोजन मुहैया कराने के लिए मुख्यमंत्री खाद्यान्न सुरक्षा योजना संचालित की है जिससे नक्सल प्रभावित इस क्षेत्र में गरीबों को जीने के लिए बहुत सहारा मिल गया है। दंतेवाडा जिले में इस बेरोजगारी के कारण हताशा के माहौल से ग्रस्त होकर युवाओं का बडी संख्या में विध्वंसक गतिविधियों से भी जुडने का भय बना रहता है। दंतेवाडा जिले के कलेक्टर श्री ओम प्रकाश चौधरी ने यहां की स्थितियों एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखकर दूरगामी सोच के तहत एक नए प्रकार के प्रयास के तहत बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त करने लायक बनाने का हौसला दिखाया है। श्री चौधरी के प्रयास से दंतेवाडा जिला मुख्यालय में एक ऐसा अनुठा कॉलेज शुरू हुआ है जिसमें जिले के अशिक्षित-शिक्षित दोनों ही तरह के युवाओं को उनकी रूचि के अनुसार तकनीकी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस कॉलेज में कोई सौर ऊर्जा से चलने वाले उपकरणों की मरम्मत करना सीख रहा है। तो कोई हैण्डपंप सुधारना या प्लंबिंग का काम। दंतेवाडा के इस आजीविका महाविद्यालय की स्थापना जिले के बेरोजगार युवाओं का कौशल उन्नयन कर उन्हें उनकी रूचि के अनुसार तकनीकी प्रशिक्षण देकर रोजगार के लिए तैयार करना है। नक्सल हिंसा प्रभावित इस क्षेत्र में अपनी पढाई अधूरी छोड चुके युवाओं को भी तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्हें हुनरमंद बनाना और रोजगार के अवसर प्रदान करना इस कॉलेज की स्थापना के उद्देश्यों में शामिल है।

देशबंधु - 3.12.11

आजीविका कॉलेज के सात विद्यार्थियों का कैम्पस चयन

दंतेवाड़ा, 02 दिसंबर (देशबन्धु)। दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा जिला मुख्यालय में संचालित आजीविका महाविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त सात विद्यार्थियों को महाविद्यालय में आयोजित कैम्पस चयन के माध्यम से रायपुर के दो कंपनियों में नौकरी मिली है। महाविद्यालय में आज आयोजित इस कैम्पस में रायपुर की फ्रेडस सोलर कंपनी में दो और कासमो प्रोडक्ट कंपनी में पांच विद्यार्थियों का चयन हुआ। आज आयोजित इस कैम्पस में 94 प्रशिक्षणार्थियों ने पंजीयन कराया था। कैम्पस में चयन के लिए राजमिस्त्री, मोटर मेकेनिक, बेल्डर, सिलाई एवं टेलरिंग, इलेक्ट्रीशियन, हेण्डपंप एवं पलम्बर, कम्प्यूटर एवं स्टील फेब्रिकेशन विधाओं में प्रशिक्षित विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान जिला कलेक्टर श्री ओम प्रकाश चौधरी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री नीरज बंसोड सहित लार्सन एण्ड टूर्बो कंपनी के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री परशुराम, फ्रेडस सोलर कंपनी के प्रतिनिधि श्री ओझा और क्रेडा के कार्यपालन अभियंता श्री राजेश त्रिवेदी भी उपस्थित रहें।

उल्लेखनीय है कि आजीविका महाविद्यालय से पूर्व में भी 18 प्रशिक्षणार्थियों का चयन विभिन्न कंपनियों में किया गया है। यह सभी प्रशिक्षणार्थी रायपुर, अंबिकापुर, बिलासपुर और कोरबा स्थित कंपनियों में कार्यरत है।